❍ 03 / 02 / 21 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *कांटो को फूल बनाने की सेवा की ?*

➢➢ *"अब घर जाना है" - यह बुधी में रहा ?*

➢➢ *स्वयं को विशेष पार्टधारी समझा ?*

➢➢ *वृत्ति को पावरफुल बना सेवा में वृद्धि की ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ अभी-अभी आवाज में आना और अभी-अभी आवाज से परे हो जाना - जैसे आवाज में आना सहज लगता है वैसे यह भी सहज अनुभव हो क्योंकि आत्मा मालिक है। *रुहानी एक्सरसाइज में सिर्फ मुख की आवाज से परे नहीं होना है। मन से भी आवाज में आने के संकल्प से परे होना है। ऐसे नहीं मुख से चुप हो जाओ और मन में बातें करते रहो। आवाज से परे अर्थात मुख और मन दोनों की आवाज से परे, शान्ति के सागर में समा जायें।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

____

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं सच्ची लगन द्वारा विघ्नों को समाप्त करने वाली मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ"*

〰✧ *सच्ची लगन विघ्नों को समाप्त कर देती है। कितनी भी रूकावटें आएं लेकिन एक बल एक भरोसे के आधार पर सफलता मिलती रही है और मिलती रहेगी, ऐसा अनुभव होता रहता है ना।*

〰✧ *जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान के बच्चे बन गए। 'मक्खन से बाल' समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।*

〰✧ अपने को ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो ना। कमजोरी तो नहीं आती। *बाप सर्वशक्तिवान हैं, तो बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। बाप ने कितना ऊंच बनाया है, क्या क्या दिया है - इसी का सिमरण करते-करते सदा हर्षित और शक्तिशाली रहेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⊹˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

———————————————

⊹˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⊹˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

〰✧ अंत मते सो गति क्या होगी? समझदार तो हो ना? इसलिए अपनी मनसा को बिजी रखेंगे ना, *मनसा सेवा का टाइमटेबुल बनायेंगे अपना तो बिन्दी लगाने की आवश्यकता नहीं पडेगी। बस, होंगे ही बिन्दी रूप। इसलिए अभी अपने मन का टाइमटेबुल फिक्स करो।*

〰✧ *मन को सदा बिजी रखो, खाली नहीं रखो।* फिर मेहनत करनी पडती है। ऊँचे-ते-ऊँचे भगवान के बच्चे हो, तो *आपका एक-एक सेकण्ड का टाइमटेबुल फिक्स होना चाहिए* क्यों नहीं बिन्दी लगती, उसका कारण क्या?

〰✧ *ब्रेक पॉवरफुल नहीं है। शक्तियों का स्टॉक जमा नहीं है इसलिए सेकण्ड में स्टॉप नहीं कर सकते।* कई बच्चे कोशिश बहुत करते हैं, जब बापदादा देखते हैं मेहनत बहुत कर रहे हैं, यह नहीं हो, यह नहीं हो, कहते हैं नहीं हो लेकिन होता रहता है।

⊹˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

―――――――――――――――――――

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ किसको देखते हो? आकार को देखते व अव्यक्त का देखते हो? *अगर अपनी व औरों की आकृति को न देख अव्यक्त को देखेंगे तो आकर्षण मूर्त बनेंगे।* अगर आकृति को देखते तो आकर्षण-मूर्त नहीं बनते हो। *आकर्षण-मूर्त बनना है तो आकृति को मत देखो। आकृति के अन्दर जो आकर्षण रूप है, उसको देखने से ही अपने से औरों को आकर्षण होगा। तो अब यही अव्यक्त सर्विस रही हुई है।* कोई भी चित्र को देखते हो, तो चित्र को नहीं देखो, लेकिन चित्र के अन्दर जो चेतन है उसको देखो। *और उस चित्र के जो चरित्र हैं उन चरित्रों को देखो। चेतन और चरित्र को देखेंगे तो चरित्र तरफ ध्यान जाने से चित्र अर्थात् देह के भान से दूर हो जायेंगे।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

―――――――――――――――――――

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"डिल :- अब सबको वापस चलना है"*

➳ _ ➳ *मैं फ़रिश्ता मधुबन डायमंड हाल में फरिश्तों की महफिल में बैठा हूँ...* अपनी चमकीली ड्रेस में सजे हुए फ़रिश्ते पूरे हाल की शोभा बढ़ा रहे हैं... पूरा डायमंड हाल रंग-बिरंगी फूलों से, गुब्बारों से सजा हुआ है... सभी फ़रिश्ते बाबा मिलन की अनमोल घडी के इन्तजार में बाबा की यादों को दिल में संजोये हुए झूम रहे हैं... *इन्तजार की घड़ियों को खत्म करते हुए बापदादा इस महफ़िल में आकर दृष्टि देकर ज्ञान अमृत की वर्षा करते हैं...*

❉ *अपने वरदानी बोल से स्वीट होम की याद दिलाते हुए स्वीट बापदादा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... इस पुरानी पतित देह की मिटटी से निकल कर... *अपने सत्य अविनाशी वजूद में खो जाओ... यह खेल अब पूरा हो गया, घर चलने का समय नजदीक आ गया है...* तो आत्मा मणि सा सज जाओ... शरीर तो यही छूटना है,साथ जाना नही... तो इसके चंगुल से स्वयं को छुड़ाते जाओ..."

➳ _ ➳ *परमात्म प्यार की कश्ती में बैठकर घर जाने की तैयारी करते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपकी मीठी यादो में देह के भान से परे होकर, अपने खुबसूरत मणि रूप की चमक को पाकर मुस्करा उठी हूँ... *देह के आकर्षण से मुक्त होकर आपका हाथ पकड़ कर, ख़ुशी से घर चलने को आमादा हूँ..."*

❉ *अनंत शक्तियों के श्रृंगार से मेरे स्वरुप को निखारते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *परमधाम में अशरीरी थे और अशरीरी बन कर ही वापस घर को चलना है... इसलिए मीठे बाबा की यादो में खोकर, अपने सत्य स्वरूप को यादो में ताजा करो...* इस विनाशी देह के भान से मुक्त हो जाओ... और निराकारी आत्मा के नशे में खोये रहो..."

➳ _ ➳ *संगमयुग में प्यारे बाबा से अपनी खोई हुई जागीर पाकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा देह के मायाजाल से बाहर निकल... अपने खुबसूरत अविनाशी रूप को यादो में बसा रही हूँ... *प्यारे बाबा आपकी यादो में अपनी खोयी चमक पाकर... धरती के लभावने विनाशी आकर्षणों

से सहज ही आजाद हो रही हूँ...”*

❊ *मन के सरोवर को स्मृतियों के कमल से खिलाते हुए मेरे बाबा कहते हैं:- * “प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *धरती पर उतर कर देह की मिटटी में खेल, कितने काले और पतित हो गए.... अब वापिस घर जाना है तो... जो खुबसूरत सितारे थे उसी रंग रूप के नशे से भर जाओ...* मै ये हूँ,मै वो हूँ... इस देहभान की खुमारी से जरा बाहर निकलो, और अशरीरी आत्मा के भान में आ जाओ...”

➽➛ _ ➽➛ *अपनी जीवन नैय्या की पतवार बाबा के हाथों में देकर इस विषय सागर से पार होते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* “हाँ मेरे मीठे बाबा... *मै आत्मा आपकी यादो में घर चलने को तैयार हो रही हूँ... देह भान के सारे भ्रमो से निकल कर... सत्य की राहो में, तेजस्वी स्वरूप लिए खुशियो में झूम रही हूँ...* देह के सारे अलंकारो को त्याग कर, गुणो और शक्तियों से श्रृंगारित हो रही हूँ...”

————————————————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कम से कम 8 घण्टा याद की यात्रा में रहने का अभ्यास करना है*"

➽➛ _ ➽➛ इस पतित सृष्टि को पावन सतयुगी दुनिया मे परिवर्तन करने का जो कर्तव्य इस समय स्वयं भगवान इस धरा पर आकर कर रहें हैं उस ऑल माइटी अथॉरिटी, पाण्डव गवर्मेंट के साथ इस कर्तव्य में उसका मददगार बनना कितने महान सौभाग्य की बात है! *कितना श्रेष्ठ भाग्य है मेरा जो भगवान की मदद करने का गोल्डन चांस भगवान ने स्वयं मुझे दिया है। कोटो में कोई, कोई में भी कोई मैं वो महान सौभाग्यशाली आत्मा हूँ जिसे भगवान ने स्वयं अपने सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए चुना है*। "वाह मैं आत्मा और वाह मेरा भाग्य"। अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में लाकर वाह - वाह के गीत गाती हुई मैं आत्मा अपने उस प्यारे पिता का कोटि - कोटि शक्रिया अदा करके उनसे वादा करती हूँ कि

अपनी हर रोज की दिनचर्या में मैं 8 घण्टे पांडव गवर्मेंट की मदद अवश्य करूँगी। तन मन धन से ईश्वरीय कार्य मे सहयोग जरूर दूँगी।

➳ _ ➳ अपने सर्वशक्तिवान, सृष्टि के रचयिता पिता से वादा करके मैं जैसे ही मन बुद्धि को उनकी याद में स्थिर करती हूँ मुझे आभास होता है जैसे मेरे पिता अपना असीम बल भरकर मुझे अथक और अचल अडोल बनाने के लिए अपने पास बुला रहें हैं। *स्वयं भगवान मेरा आह्वान कर रहें हैं यह विचार कर मन ही मन गदगद होती हुई मैं सेकण्ड में देह भान का त्याग कर अपने अनादि बिंदु स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ और अपने मन बुद्धि को पूरी तरह अपने प्यारे पिता के स्वरूप पर फोकस कर लेती हूँ*। देख रही हूँ अपने सर्वशक्तिवान शिव पिता को मैं फरिश्तो के अव्यक्त वतन में अपने अव्यक्त रथ में विराजमान होकर बाहें फैलाये अपना इंतजार करते हुए। अव्यक्त ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में अनन्त प्रकाशवान अपने शिव पिता को मैं देख रही हूँ जो मुस्कारते हुए अव्यक्त इशारे से मुझे बुला रहें हैं।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे एक अद्भुत शक्ति मेरे अंदर जागृत हो रही है जो मुझे धीरे - धीरे अव्यक्त स्थिति में स्थित कर रही है। मेरा साकार शरीर लाइट के शरीर मे परिवर्तित होता जा रहा है। *ऊपर से लेकर नीचे तक अब मैं स्वयं को एक सुंदर प्रकाश की काया में अनुभव कर रही हूँ। स्वयं को मैं इतना हल्का महसूस कर रही हूँ कि ऐसा लग रहा है जैसे मेरे पाँव धरती को स्पर्श ही नही कर रहे और धीरे - धीरे अपनी प्रकाश की काया के साथ मैं ऊपर उड़ रही हूँ*। एक बहुत ही सुंदर अनुभूति और लाइट स्थिति का अनुभव करते हुए सारे विश्व का चक्कर लगा कर अब मैं आकाश से ऊपर जा रही हूँ। *निरन्तर ऊपर की ओर उड़ते हुए अब मैं सफेद प्रकाश की उस खूबसूरत दुनिया मे प्रवेश कर रही हूँ जहाँ अव्यक्त बापदादा मेरा इंतजार कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ फ़रिश्तों की इस लाइट की दुनिया में अपने सम्पूर्ण लाइट माइट स्वरूप में अपना अनन्त प्रकाश पूरे वतन में फैलाते हुए बापदादा को मैं सामने देख रही हूँ। अपनी दोनों बाहों को फैलाये अपने इंतजार में खड़े बापदादा के मुस्कारते हुए सुंदर मनभावन स्वरूप को निहारते हुए बापदादा के पास पहुंच कर मैं उनकी बाहों में समा जाती हूँ। *उनके नयनो में अथाह प्यार का सागर मेरे

लिए उमड़ रहा है उस स्नेह सागर की गहराई में डूब कर मैं गहन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रही हूँ। अपने प्यारे बापदादा का अथाह प्यार पाकर तृप्त होकर अब मैं उनके सम्मुख बैठी हूँ और उनसे मीठी दृष्टि लेकर परमात्म शक्तियों को अपने अंदर भर रही हूँ*। बाबा के मस्तक से निकल रही तेज लाइट सीधी मुझ में प्रवाहित हो रही है। अथक सेवाधारी बन पाण्डव गवर्मेंट अर्थात ईश्वरीय कार्य मे मदद करने के लिए बाबा अपने हाथ मे मेरा हाथ लेकर अपनी सारी शक्तियों का बल मुझे दे रहें हैं। वरदानों से मेरी झोली भरकर मुझे भरपूर कर रहें हैं।

➽ _ ➽ सर्व शक्तियों, सर्व वरदानों और सर्व खजानो से सम्पन्न होकर अब मैं अपनी लाइट की शक्तिशाली सूक्ष्म काया के साथ वापिस साकारी दुनिया मे लौट कर अपने साकार ब्राह्मण तन में आकर विराजमान हो जाती हूँ। *भगवान की पाण्डव गवर्मेंट का सच्चा सेवक बन सृष्टि परिवर्तन के उनके कार्य मे मदद करने के लिए अब मैं सम्पूर्ण समर्पण भाव से भगवान द्वारा रचे रुद्र ज्ञान यज्ञ में पूरा सहयोग दे रही हूँ। शरीर निर्वाह अर्थ अपने सभी दैनिक कर्तव्यों को पूरा करने के साथ - साथ 8 घण्टा पाण्डव गवर्मेंट की सेवा में सहयोगी बन, परमात्म सेवा और परमात्म याद द्वारा अपने संगमयुगी ब्राह्मण जीवन को मैं श्वांसों श्वांस सफल कर रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं स्वयं को विशेष पार्टधारी समझ साधारणता को समाप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं परम व श्रेष्ठ आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा अपनी वृत्ति को सदैव पावरफुल बना लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सेवा में वृद्धि स्वत: होते अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं निष्काम सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

────────────────────────

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. बापदादा देख रहे थे कि सबसे *तीव्र गति की सेवा है - 'वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना'। वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है।* वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुँच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो।

➳ _ ➳ 2. आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट जन्म तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं ना! देखा है ना! मन्दिर देखा हैं ना!

➳ _ ➳ 3. *मन्दिर की मूर्तियाँ प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं* अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं। कितने भक्त वायब्रेशन द्वारा अपनी सर्व इच्छायें पूर्ण कर रहे हैं। तो हे चैतन्य मूर्तियाँ, *अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैलाओ।*

✺ *ड्रिल :- "वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्वशक्तिमान ब्राह्मण आत्मा *डाइमंड हॉल में बापदादा के समक्ष बिराजमान हूँ... बापदादा मुझे अपनी दृष्टि और वायब्रेशन से निहाल कर रहे है...* बाबा की भृकुटि से नैनो से कभी प्रेम तो कभी सुख तो कभी आनंद कि किरणें फैल रही है... कभी बापदादा मुझे शक्तिशाली फरिश्ता बना देते तो कभी पवित्रता के झरने में नहलाते है... मीठे बाबा को मुझ पर कितना गर्व है... *सबके मुख से यही निकल रहा है मेरा बाबा मेरा बाबा...* मेरा बाबा मीठा बाबा प्यारा बाबा... बापदादा देख रहे थे कि सबसे तीव्र गति की सेवा है - 'वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना'... वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है...

➳ _ ➳ जैसी हमारी वृति अर्थात हमारी कामनाएँ और हमारी भावनाएँ होती है वैसा ही वायुमंडल बनता जा रहा है... शुभ कामनाएँ और शुभ भावनाओं की मात्रा में थोडी सी भी कमजोरी आई तो वायुमंडल भी कमजोर संकल्पो का बन रहा है... जब की *बाबा की पॉवरफुल दृष्टि से वायुमंडल भी अचानक पॉवरफुल बन गया...* ये बाबा की पॉवरफुल वृति का ही कमाल है जो हम सब यहाँ मधुबन में बैठे है... इस तरह हम वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते है... *वृत्ति द्वारा जहाँ चाहे, जितनी आत्माओं के प्रति चाहे यहाँ बैठे-बैठे पहुँच सकते है...*

➳ _ ➳ यहाँ बैठे बैठे मैं आत्मा संपूर्ण विश्व में *शुभभावना और शुभकामनाओ की वृत्ति द्वारा आत्माओ की दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर रही हूँ...* मुझसे शुभभावना और शुभकामनाओ के प्रकंपन फैल रहे है... चाहे कुछ आत्माओ के प्रति हो या कोई आत्मा के प्रति हो या विश्व के प्रति हो सब जगह शुभ वायब्रेशन फैल रहे है... अब मैं आत्मा मंदिरो में स्थापित अपनी ही मूर्तियो को देख रही हूँ... मैं देख रही हूँ की *आज भी लास्ट जन्म तक ये मूर्तियां वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रही हैं...*

➳ _ ➳ मन्दिर की *मूर्तियाँ प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रही हैं...* अर्थात मैं आत्मा मन्दिर की मूर्ति सेवा कर रही हूँ... मंदिर में खडे सारे

भक्तो की वायब्रेशन द्वारा सर्व इच्छायें पूर्ण कर रही हूँ... घर घर में जहाँ कही भी मेरी मूर्ति विराजमान है उस घर की सारी आत्माएँ निश्चिंत और निर्भय स्थिति की अनुभूति कर रही है... मंदिरो में भीड बढती जा रही हैं... सारे भक्त तृप्त हो रहे है... *सबकी शुभ मनोकामनाएं पूर्ण होने पर सब सुख शांति संपन्न निर्विध्न जीवन जी रहे है...*

➻ _ ➻ जैसे मेरी जड मूर्ति इतना कर सकती है तो मैं तो स्वयं ही चैतन्य मूर्ति हूँ तो कितना कर सकती हूँ... *मैं संबंध संपर्क में आनेवाली हर एक आत्मा के प्रति शुभ भावना की वृत्ति और शुभ कामनाओं की वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैलाती जा रही हूँ...* सबके विघ्न नष्ट हो रहे है... पूरे विश्व का भ्रमण करती जा रही हूँ... मैं सुन रही हूँ चारो ओर भक्तो की पुकार को... अपने हस्तो द्वारा, नैनो द्वारा और वायब्रेशन द्वारा सबका कल्याण करती जा रही हूँ... सब सुखी हो रहे है सबका भला हो रहा है... सब स्वयं को भरपूर महसूस कर रहे है... शुक्रिया बाबा आपका बहुत बहुत शुक्रिया...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔